वर्ष - प्रथम, अङ्क - प्रथम,
दिसम्बर - 2023

बुन्देलखण्ड विमर्श

Bundelkhand Vimarsh

(भारतीय ज्ञान परम्परा की सान्दर्भिक एवं पुनरीक्षित शोधपत्रिका)

(A Refereed and Reviewed Research Journal of Indian Knowledge System)

संस्कृति संस्कृत संस्कार शिक्षा समिति
॥ तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

बरौदी संस्कृति संस्कृत संस्कार शिक्षा समिति

BARAUDI SANSKRITI SANSKRIT SANSKAR SHIKSHA SAMITI

वर्ष - प्रथम

अङ्क - प्रथम
दिसम्बर - 2023

बुन्देलखण्ड विमर्श

BUNDELKHAND VIMARSH

(भारतीय ज्ञान परम्परा की सान्दर्भिक एवं पुनरीक्षित शोधपत्रिका)

(A Refereed and Reviewed Research Journal of Indian Knowledge System)

बरौदी संस्कृति संस्कृत संस्कार शिक्षा समिति

BARAUDI SANSKRITI SANSKRIT SANSKAR SHIKSHA SAMITI

ग्राम - बरौदी, पत्रालय - सनौरा, जिला - दतिया (मध्यप्रदेश), भारत, 475686.

Vill.- Barodi, P.O.-Sanora, Distt.-Datia(Madhya Pradesh) Bharat,475686.

Cont.- +91 88277 66640, +91 78799 58816,

Email:- sanskritsamiti17@gmail.com, Website:- www.sanskritsamiti.org

प्रधान सम्पादक

डॉ. उपेन्द्र भार्गव

सम्पादक

डॉ. आनन्द प्रकाश शुक्ल

सह सम्पादक

डॉ. कपिल कुमार भार्गव
शिरीन कुरैशी

सम्पादक मण्डल

प्रो. श्यामदेव मिश्र
प्रो. प्रसाद गोखले
डॉ. अवतारजीत सिंह
डॉ. नितिन जैन
डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी
डॉ. रामकुमारी
डॉ. रमण मिश्र
डॉ. मोहन बैरागी
डॉ. लवलेश मिश्र
प्रो. नीलाभ तिवारी
प्रो. पराग जोशी
डॉ. कृष्णकान्त तिवारी
डॉ. देशबन्धु
डॉ. दिनेश रसाळ
डॉ. हिमांशु द्विवेदी
डॉ. प्रभाकर पाण्डेय
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. रमा आर्या

प्रबन्धन एवं तकनीकि सम्पादक

विवेक कुमार शर्मा
राज भार्गव
वाइ. श्री तेजस्वी

सदस्यता विवरण

वार्षिक सदस्यता	-	एक हजार पाँच सौ रुपये (१५००/-) मात्र
एक अंक	-	सात सौ पचास रुपये (७५०/-) मात्र

प्रकाशक

बरौदी संस्कृति संस्कृत संस्कार शिक्षा समिति

सम्पादकीय

भारत की नवीन शिक्षा नीति ने भारतीय चिंतकों, विचारकों एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के अतीन्द्रिय प्रबुद्ध मनीषियों के अनुभवजन्य अपरिमित एवं असीमित ज्ञान धारा से सकल विश्वमंडल को परिचित कराने के उद्देश्य से अनन्त संभावनाओं के द्वार खोले हैं। वस्तुतः इस अवसर की प्रतीक्षा भारत देश सुदीर्घकाल से कर रहा था, कि इस देश में शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो इस देश की प्रकृति, प्रवृत्ति, आवश्यकताओं और सामर्थ्य के अनुरूप एक ऐसे उत्कृष्ट भविष्य का निर्माण करे जिससे सम्पूर्ण विश्व लाभान्वित हो सके। यह तभी संभव हो सकता है जब भारत की मनीषा और चिंतन में निरन्तर भारतीय ज्ञान परम्परा का मूलभूत विमर्श उच्चतम प्रतिमानों के साथ समाहित किया गया हो। भारत के पूर्वज वैज्ञानिक ऋषियों – मुनियों, दार्शनिकों, तत्ववेत्ताओं, अध्यात्मविदों तथा ब्रह्माण्ड के रहस्यविदों ने जिस भारतीय ज्ञान धारा का दर्शन और निर्वचन किया उससे भारत देश इस कारण वंचित रहा क्योंकि राजनैतिक स्वातन्त्र्य हस्तान्तरित हो जाने पर भी वैचारिक स्वातन्त्र्य का हस्तान्तरण नहीं किया जा सका था। परिणाम स्वरुप अंग्रेजों द्वारा बनायी गयी शिक्षा व्यवस्था के सतत अन्धानुकरण से भारतीय ज्ञान मीमांसा के परम ज्ञान से यह देश वंचित ही रहा।

आज सम्पूर्ण विश्व इस तथ्य को स्वीकार करता है कि भारत एक प्राचीन और आधुनिक युग की सबसे जीवन्त सभ्यता है जिसमें धर्म, संस्कृति, नैतिकता, उदारता, सहिष्णुता, समावेशी प्रकृति, विश्व बन्धुत्त्व तथा विश्व का नेतृत्व करने का सामर्थ्य है, तो उसके मूल में कहीं अनेक वर्षों के भारतीय ज्ञान परम्परा की बीज ही है। आज अवसर है कि उस महनीय ज्ञान धरोहर को भारत के अध्येताओं शोधकर्ताओं तथा गुणी जनों के माध्यम से जनमानस में पुनः प्रतिष्ठित किया जाए ।

शोध पत्रिका 'बुन्देलखण्ड विमर्श' भारतीय ज्ञान परम्परा प्रसार के उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु आप सभी सुधी पाठकों, विद्वज्जनों, समीक्षकों, आलोचकों के समक्ष इस आशय के साथ प्रस्तुत है कि आपके महत्वपूर्ण सुझाव और मार्गदर्शन हमारे उद्देश्य को प्राप्त करने में पाथेय का कार्य करेंगे।

आपके स्नेह एवं सहयोग का आकाङ्क्षी !

डॉ. आनन्द प्रकाश शुक्ल